विशद

कालसर्प दोष निवारक विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 16 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 20 अर्घ्य
कुल 44 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद कालसर्प दोष निवारक विधान**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2016' प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) ब्र. आस्था दीदी9660996425, ब्र. सपना दीदी ब्र. आरती दीदी

E-mail : vishadsagar11@gmail.com

प्राप्ति स्थल : 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो. : 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर, मो. : 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), 9812502062, 09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971

मूल्य : 25/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री प्रकाश चन्द ओम देवी श्रीमाल
104/132 मीरा मार्ग, मानसरोवर जयपुर
मो.: 9828555554

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
09811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

कालसर्पयोग दोष निवारण यंत्र मंडल एवं पूजन अनुष्ठान सामग्री

कलिकुंड श्री पार्श्वनाथ यंत्र,
श्रीफल 7,
नाग मोहिनी लकड़ी 50 ग्राम,
मूंग हरी खड़ी 50 ग्राम,
धनिया खड़ी 50 ग्राम,
एक कलश कांसे का
(लोहे स्टील का नहीं) 1,
चाँदीका सातिया 1,
काली उड़द 100 ग्राम,
खड़ी हल्दी 50 ग्राम,
कपूर 50 ग्राम,
केसर 1 ग्राम,
पीला सरसों 100 ग्राम,
घी 250 ग्राम,
रक्षा सूत्र 1 लच्छी,
इलायची 10 ग्राम,
गूगल 10 ग्राम,
लाल चंदन 50 ग्राम,
काली सरसों 50 ग्राम,
गुड़ 100 ग्राम,
नारियल चिटक 50 ग्राम,
चाँवल 5 किलो,
पिसी हल्दी 50 ग्राम,
नारियल गोले 5,
बादाम 500 ग्राम,
लौंग 100 ग्राम,
सुपारी बड़ी 100 ग्राम,
सर्प जोड़ा 1
दीपक 2 बड़े,
कुंड मिट्टी के 1 बड़ा,
सफेद कपड़ा 7 मीटर,
पीला कपड़ा 1/2 मीटर,
दूध 100 ग्राम,
आम की लकड़ी 1/2 किलो
देवदार लकड़ी 1/2 किलो
कुछ समान मंदिर या घर से
जुटाना टेबिल, चौकी, चटाई
पूजन बर्तन सेट
मयूर पिच्छी, लाल मिर्च साबुत 11

कालसर्प निवारण के कुछ सहज उपाय

1. आप सच्चे देव की दर्शन पूजन जाप अवश्य करें।
2. शक्तिनुसार अपाहिज को भोजन करावें।
3. अपने ऊपर काले उड़द 25 ग्राम लेकर ऊपर से नीचे को लेकर बाहर फेंक दें।
4. काले सरसों को अपने ऊपर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर किसी गड्ढे में या नदी में डालें।
5. अपने पास में हमेशा छोटा सा मोर पंख रखें।
6. अपने हाथ में हमेशा रक्षा सूत्र पंचरंगा ही बांधकर रखें।
7. प्रतिदिन सोने के स्थान पर छोटे दीपक में मीठा दूध भरकर रखें। और दीपक का दूध गमलें में डाल और उसकी मिट्टी 6 महीने में गांव या शहर के बाहर डाल दें उसमें नवीन मिट्टी डालें।
8. हर महीने अपने सिर से पाँच बालों को हाथ से उखाड़कर अग्नि में जलाये।
9. हर महीने अपने ऊपर से नारियल को 9 बार घुमाकर किसी नदी के या तालाब किनारे छोड़ें।
10. नागमोहनी लकड़ी को 11 बार णमोकार मंत्र पढ़कर ऊपर से घुमाकर गाँव के बाहर छोड़ें या गड्ढे में डालें।
11. गूगल को 21 बार णमोकार मंत्र पढ़कर अपने ऊपर घुमाकर अग्नि में जलाये।
12. प्रति रविवार श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा के सामने या वेदी पर नारियल चढ़ाएं। अनुष्ठान या निवारण हो जाने के बाद नहीं चढ़ाना।
13. श्री कालसर्प निवारण स्तोत्र प्रतिदिन पढ़े।
14. केतु ग्रह के निवारण हेतु श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रतिदिन करें।

15. राहू ग्रह के निवारण हेतु श्री नेमिनाथ की पूजन जाप करें।
16. कालसर्प निवारण की जाप चाँदी की या सफेद रंग की माला से करें।
17. केतु ग्रह की शांति जाप–**ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् ग्रह शांति कुरू कुरू नमः स्वाहा।**
18. राहू ग्रह की शांति जाप–**ॐ ह्रीं राहू ग्रह अरिष्ट निवारक श्री नेमिनाथाय नमः मम् ग्रह शांति कुरू कुरू नमः स्वाहा।**
19. कालसर्प योगी तेल एवं काली चीजों का सेवन न करें।
20. कालसर्प योगी को चंदन या केशर का तिलक लगाना चाहिए।
21. कालसर्प योगी मधु, मांस, शराब का सेवन न करें।
22. रविवार को विशेष रूप से ब्रह्मचर्य से रहें।
23. कालसर्प योग निवारण के उपरांत उपरोक्त क्रियाएं नहीं करना।
24. कालसर्प योग निवारण का सर्प जैसा विष उतारने वाला मंत्र होता है उसके द्वारा झड़वाना आवश्यक है। उस मंत्र को दो साल में सिद्ध किया जाता है।

नोट : हर किसी से यह निवारण न करावें

कालसर्प निवारण अनुष्ठान विधि

1. पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना खाये पिये पूजन करना चाहिए।
2. कलिकुंड श्री पार्श्वनाथ यंत्र के सामने पूजन प्रातःकाल ही करना चाहिए।
3. पूजन के पहले देवआज्ञा एवं जातक की शुद्धि करें।
4. जातक को रक्षा बंधन से वेष्ठित करें।
5. तिलक लगाकर संकल्पित करें।
6. मंगलाष्टक। दिग्बंधन, मंडल स्थापना।
7. मंडल पर जातक द्वारा मंगल कलश एवं दीपक स्थापना करावे।

8. कालसर्प निवारक शांतिधारा जातक द्वारा कलिकुंड श्री पार्श्वनाथ यंत्र पर कराई जावे।
9. विनय पाठ एवं नित्यनियम पूजा, नवदेवता पूजा करे।
10. सर्वग्रह अरिष्ट निवारक चौबीसी पूजा।
11. राहूग्रह अरिष्ट निवारक नेमिनाथ भगवान की पूजा।
12. केतू ग्रह अरिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा
13. कालसर्प योग निवारक विशिष्ट अर्घ मंडल पूजा।
14. कालसर्प विधान में जातक से 8 दिशाओं के आगत कष्ट निवारक अर्घं।
15. 4 तीर्थकर अर्घं पूजा।
16. मंडल पर प्रत्येक वलय में प्रत्येक जातक द्वारा 11, 11 अर्घं चढ़ावें।
17. चार वलय के 44 अर्घं प्रत्येक वलय का श्रीफल चढ़ावे।
18. जयमाला, महार्घ, शांतिपाठ, विसर्जन।
19. जातक के ऊपर कालसर्प योग निवारण की विशेष विधियाँ विशिष्ट अनुष्ठान जानकार कर्ता के द्वारा कुंड के सामने बैठाकर क्रिया कराई जावें।
20. विधियां हो जाने के बाद जातक भोजन करें एवं भोजन के उपरांत भगवान के 1008 नाम जातक स्वयं पढ़े या दूसरे से सुनें।
21. जातक को उस दिन तले हुए पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए।

विशेष–कालसर्प दोष व सर्वसंकट निवारण हेतु यह विधान अवश्य करे।

संकलन–मुनि विशाल सागर

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।

एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

नवग्रह अरिष्ट निवारक पूजन

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है॥
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतू॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिना:। अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(पाइता छंद)

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये गंध चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, पावन अक्षय पद पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से पूज रचाएँ, हम काम रोग विनसाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनसाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूज रचाएँ, मुक्ती फल शिव पा जाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देके शांतीधार हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।
प्रकट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान॥

॥शांतये शांतिधारा॥

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते हैं हम आज।
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज॥

॥दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांती पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांत किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बाधा विनशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ पद पूज रचाये, राहु अरिष्ट नहीं रह पाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाये, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्रेभ्यः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा– गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोलो छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।
नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।
सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से।।
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमी सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव।।2।।
गुरु ग्रह की शांति हेतू हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयास जिन, सम्भव सुमति पूजते आज।।
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते।।3।।
राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें।।
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांती कारक, सर्व जगत मंगलकारी।।4।।
जन्म लग्न राशी के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते।।

पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्रबाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज।।5।।

दोहा– चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो।।

।।इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ पूजा

स्थापना (सखी छन्द)

जिनको जग भोग ना भाए, वे मुक्ती पथ अपनाए।
हे नेमिनाथ जगनामी, आह्वानन् करते स्वामी।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभु के चरण तीन धारा कराएँ,
सभी पाप मल धोके पावन कहाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कपूरादि चंदन महांगध लाए,
परम मोक्ष गामी की पूजा को आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुले शालि तन्दुल धरे पुञ्ज आगे,
निजानन्द पाएँ सभी शोक भागें
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुगंधित सुमन ले बनाई ये माला,
चढ़ाते चरण काम को मार डाला।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य ताजे बनाएँ,
प्रभू पूजते भूख व्याधी नशाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशें,
करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशें।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगन्धित सुरभि धूप खेते अगनि में,
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि ताजे ये चरणों चढ़ाएँ,
मिले मोक्ष फल नाथ शिव सौख्य पाएँ
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदिक मिला अर्घ्य लाए,
सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू पाने आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा

शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांतीधार॥

(शान्तये शांतीधारा)

दोहा

करते हैं पुष्पाञ्जली, पाने शिव सोपान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान॥

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए॥1॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली॥2॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए॥4॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े॥5॥

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल॥

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन॥1॥
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान॥2॥
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान॥3॥
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़॥4॥

कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार॥
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान॥5॥
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास॥6॥

दोहा– भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष॥

ॐ ह्रीं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

केतुग्रहारिष्ट एवं कालसर्प निवारक श्री पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना (सखी छन्द)

उपसर्गों पर जय पाए, वे पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वान को आए॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥1॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥2॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय

चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥3॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥4॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥5॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥6॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥7॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥8॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं॥9॥

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय

अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–देते शांती धार हम, लेकर पावन नीर।
पाएँ हम भाव सिन्धु का, अतिशीघ्र ही तीर।।

(शान्तये शांतीधारा)

दोहा–देते पुष्पों से पुष्पाञ्जली, देते बारम्बार।
यही भावना है विशद, पाना भव से पार।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते हैं।।4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं।।6।।
अब ग्रह शांती पाने हेतू, श्री पार्श्वनाथ को ध्याते हैं।
हम बनें मोक्ष पथ के राही यह विशद भावना भाते हैं।।7।।

दोहा– यह संसार असार है, जान सके ना नाथ!।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

कालसर्प योग निवारनार्थ विशेष अर्घ्य

दोहा– कर्मों के नाशी हुए, पाए केवल ज्ञान।
शिव पथ के राही बने, करते जगकल्याण।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

हे कल्याण धाम पापों के, नाशक तुम हो प्रभो! उदार।
भयाक्रान्त जीवों में भय का, नाश किए हो तुम उपकार।।
पारावार में डूब रहे जो, जीवों को प्रभु पोत समान।
ऐसे श्री जिन पार्श्वनाथ का, करते भाव सहित गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्र पतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण गौरव सागर सा जिन का, शब्दों में ना होवे व्यक्त।
वृहस्पति भी गुण गा के हारे, बने आपका अतिशय भक्त।।
कमठासुर के मान भंग को, अग्नि शिखा सम हो जिनदेव।
नाथ! आपकी स्तुति करते, विस्मय पूर्वक भक्त सदैव।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आपका रूप सलौना, कैसे करें स्वरूप बखान।
मन्द बुद्धि असमर्थ रहे हम, करने में प्रभु तव गुणगान।।
प्रखर सूर्य की दिव्य कांति में, निज स्वरूप ना लखे उलूक।
वर्णन कैसे कर पाएगा, बैठेगा वह होके मूक।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म का हो विनाश तब, निज अनुभव करते हैं लोग।
शक्ति भले कितनी हो उनकी, गुण वर्णन का पाते योग।।
प्रलय काल होने पर सागर, का जल बाहर तक जावे।
ढेर दिखे रत्नों का भारी, कोइ ना जिनको गिन पावे।।4।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं मतिहीन आप हैं ज्ञानी, गुण रत्नों के हो आगार।
स्तुति करते नाथ! आपकी, अपनी बुद्धी के अनुसार।।

यथा मंदबुद्धी का बालक, अपनी दोनों भुजा पसार।
उत्सुक होकर बतलाता है, कितना सागर का आकार।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नत गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! आपके गुण हैं अनुपम, योगी कहने में असमर्थ।
अज्ञानी मुझसा अबोध क्या, कहने में हो सके समर्थ।।
फिर भी निज भक्ती से प्रेरित, हो गुण गाते बिना विचार।
पक्षी ज्यों बातें करते हैं, निज-निज भाषा के अनुसार।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अचिन्त्य महिमा स्तुति की, हे जिन! करे कौन गुणगान।
मात्र आपका नाम जीव को, भव दुख से देता है त्राण।।
ग्रीष्म ऋतू में तीव्र ताप से, पीड़ित होकर होय अधीर।
पद्म सरोवर की क्या कहना, सुख पहुँचाए सरस समीर।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनर्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मंदिर में वास करें जब, श्री जिन पार्श्वनाथ भगवन्।
ढीले पड़ जाते कर्मों के, दृढ़तर कर्मों के बन्धन।।
चन्दन तरु पर लिपट रहे हों, काले नाग जहाँ विकराल।
वन में आते ही मयूर के, बन्धन ढीले हों तत्काल।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–कर्म घातिया नाशकर, बने आप अर्हन्त।
भव सिन्धू को पारकर, पाएँ सौख्य अनन्त।।

ॐ ह्रीं अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हे जिनेन्द्र! तव दर्शन करके विपदाओं का होय विनाश।
अन्धकार भग जाता जैसे, उदित सूर्य का होय प्रकाश।।

पशुओं को रात्री में जैसे, आकर घेर रहे हों चोर।
गौ स्वामी को देख भागते, डर के कारण होते भोर।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्ग विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमको हृदय बसाने वाला, हो जाता है भव से पार।
भवि जीवों के लिए आप हो, चिन्तन का अनुपम आधार।।
वायू पूरित मसक तैरकर, हो जाती है सागर पार।
मन मंदिर में तुम्हें बसाने, से जीवों का हो उद्धार।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि-हर आदी महापुरुष भी, कामदेव से हारे हैं।
कामदेव के बाण आपने, क्षण में जीते सारे हैं।।
दावानल का पानी जैसे, कर देता है पूर्ण विनाश।
उसी नीर का क्रोधित होकर, बड़वानल कर देता नाश।।11।।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाथ क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्य किसी से जिनकी तुलना, करना सम्भव नहीं अरे!।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त का, कैसे कोइ गुणगान करे।।
प्रभु को हृदय बसाते हैं जो, भवसागर तिर जाते हैं।
हैं अचिन्त्य महिमा श्री जिन की, चिन्तन में न आते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे पहले प्रभु आपने, क्रोध शत्रु का नाश किया।
क्रोध बिना फिर कहो आपने, कैसे कर्म विनाश किया।।
बर्फ लोक में ठण्डा होकर, रक्षा कर झुलसाता है।
क्षमाजयी प्रभु तुमरे द्वारा, बैरी जीता जाता है।।13।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ महर्षी प्रभू आपकी, महिमा अनुपम गाते हैं।
हृदय कमल में ज्ञान नेत्र से, अन्वेषण कर ध्याते हैं।।

कमल कर्णिका श्रेष्ठ बीज का, है पवित्र उत्पत्ति स्थान।
हृदय कमल के मध्य भाग में, शुद्धातम का होता ध्यान।।14।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु शिला अग्नी को पाकर, तजती किट्ट कालिमा रूप।
पत्थर की पर्याय छोड़कर, हो जाता है स्वर्ण स्वरूप।।
ऐसे ही संसारी प्राणी, करें आपका निश्चल ध्यान।
परमातम पद पाने वाले, बनें वीतरागी विज्ञान।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस शरीर के मध्य बिठाकर, भविजन तुमको ध्याते हैं।
उस शरीर को आप जिनेश्वर, फिर क्यों नाश कराते हैं।।
राग-द्वेष से रहित जीव का, विग्रह ही स्वभाव रहा।
कायदोष को शमित किया है, सत्पुरुषों ने पूर्ण अहा।।16।।

ॐ ह्रीं देहदेहि कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अभेद बुद्धी के द्वारा, योगी करें आपका ध्यान।
है प्रभाव यह प्रभू आपका, हो जाते हैं आप समान।।
यह अमृत है ऐसी श्रद्धा, करके जल पीते जो लोग।
विष विकार में मंत्रित जल से, होता है क्या नहीं वियोग।।17।।

ॐ ह्रीं संसार विष सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानी प्राणी कहते हैं, तुमको ब्रह्मा विष्णु महेश।
अन्यमतावलम्बी पूजा शुभ, करें आपकी श्रेष्ठ जिनेश।।
निश्चित मानो प्यारे भाई, जिनको हुआ पीलिया रोग।
श्वेत शंख भी पीला दिखता, उस बीमारी के संयोग।।18।।

ॐ ह्रीं सर्वजन वन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाए तुमरे पास।
मानव की क्या बात शोक तरू, हो अशोक का पूर्ण विनाश।।

सूर्योदय होने पर केवल मानव, ही ना पाते बोध।
वनस्पति भी निद्रा तजकर, पा लेती है पूर्ण विरोध॥19॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सघन पुष्प वृष्टी की जाती, देवों द्वारा अपरम्पार।
डन्ठल नीचे ऊर्ध्व पाँखुड़ी, होती पुष्पों की शुभकार॥
मानो डण्ठल सूचित करते, आते हैं जो तुमरे पास॥
कर्मों के बन्धन भव्यों के, हो जाते हैं पूर्ण विनाश॥20॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गम्भीर हृदय के सागर, से मुखरित हैं दिव्य वचन।
सच है सुधा समान मानते, तीन लोक में सारे जन॥
अमृतवाणी पीके प्राणी, अक्षय सुख पा जाते हैं।
आकुलता को तजने वाले, अजर-अमर पद पाते हैं॥21॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चँवर ढुराते देव तो पहले, नीचे फिर ऊपर जाते।
मानो जग जीवों को झुककर, विनय शीलता सिखलाते॥
'विशद' भाव से करते हैं जो, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
कर्म नाशकर के वह प्राणी, जाते हैं फिर मोक्ष सदन॥22॥

ॐ ह्रीं सुरचामर सहित विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन स्वर्णिम कंचनमय, पर स्थित हैं श्री जिनेश।
दिव्य ध्वनि प्रगटाते अनुपम, श्यामल तन में प्रभा विशेष॥
होता स्वर्ण सुमेरू पर ज्यों, काले मेघों का गर्जन।
हर्षित होकर भव्य मोर ज्यों, करें आपका अवलोकन॥23॥

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल दैदीप्यमान शुभ, सुर तरु की छवि लुप्त करे।

स्वयं अचेतन होकर भी जो, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ अरे!॥
भव्य जीव हे नाथ! आपकी, स्वयं निकटता में आवे।
वीतराग हो भव्य जीव वह, मोक्ष निकेतन को पावे॥24॥

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-नाथ आपकी भक्ति से, हो कर्मों का नाश।
भवि जीवों को शीघ्र ही, मिलता शिवपुर वास॥

ॐ ह्रीं षोडश दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(रोला छन्द)

दुन्दुभि नाद गगन में होवे, देवों द्वारा।
मानो चिल्लाकर कहता, लो चरण सहारा॥
मोक्षपुरी जाना चाहो तो, प्रभु को ध्याओ।
तज प्रमाद हे प्राणी! तुम भी, शिवपद पाओ॥25॥

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथ नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र त्रिभुवन के नाथ! बताने वाले।
तारा गण की छवी युक्त हैं, श्रेष्ठ निराले॥
त्रिविध रूप धारण कर, जैसे चाँद दिखावे।
होकर भाव विभोर प्रभू, सेवा को आवे॥26॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय महिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोना चाँदी माणिक से त्रय, कोट बनाए।
तीन लोक के पिण्ड सम्पदा, युक्त कहाए॥
कान्ति कीर्ति व तेज पुञ्ज का, वर्तुल गाया।
पार्श्व प्रभू का समवशरण, जगती पर आया॥27॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के मुकुटों की दिव्य, सुमन मालाएँ।

नमस्कार के समय चरण में, जो गिर जाएँ।।
मानो वह तव चरणों में, शुभ जगह बनाएँ।
पाद पद्म को छोड़ और, अब कहीं न जाएँ।।28।।

ॐ ह्रीं भक्तजनान वन पतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ अधोमुख पक्व घड़ा, सागर में जावे।
गहन जलाशय से मानव को, पार करावे।।
भव सिंधू से हुए विमुख, हैं संत निराले।
भव्यों को भव तारक, अतिशय महिमा वाले।।29।।

ॐ ह्रीं निज पृष्ट लग्न भय तारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के नाथ आप, निर्धन कहलाए।
तीन काल के ज्ञाता हो, अज्ञानी गाए।।
तुम अक्षर स्वभावी, कोई लिख न पाए।
सर्व चराचर के ज्ञाता, प्रभु आप कहाए।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्त्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपित कमठ ने नभ मण्डल में, धूल गिराई।
तव तन की छाया को भी, वह छू न पाई।।
तिरस्कार की दृष्टी से, जो कार्य कराया।
विफल मनोरथ हुआ, कर्म का बन्धन पाया।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रव जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरजे मेघ चमकती बिजली, खूब दिखाई।
जल की वृष्टी महा भयंकर, वहाँ कराई।।
फिर भी पार्श्व प्रभू का, वह कुछ न कर पाया।
अपने हाथों निज पद, मानो खड्ग चलाया।।32।।

ॐ ह्रीं कमठ कृतजलधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महा भयानक नर मुण्डन की, धारी माला।

और वदन से निकल रही थी, अग्नी ज्वाला।।
भंग तपस्या करने, भूत-प्रेत दौड़ाए।
प्रभु का कुछ न बिगड़ा, कर्म का बन्ध उपाए।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रव जयनशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुलकित होकर चरण शरण, प्रभु का पा जाते।
तजकर माया जाल, तीन कालों में आते।।
विधिवत् करें अर्चना, हे जगतीपति तेरी।
होगा जीवन धन्य, मिटे भव-भव की फेरी।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिक वन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

हे मुनीन्द्र! हम कई जन्मों से, दुःख उठाते आए हैं।
कानों से हम नाम आपका, फिर भी न सुन पाए हैं।।
मंत्रोच्चार पूर्वक स्वामी, सुने आपका जो भी नाम।
विपदा रूपी नागिन से वह, पा लेते क्षण में विश्राम।।35।।

ॐ ह्रीं पवित्र नामधेयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल में नाथ आपके, कई जन्मों से ना आए।
मनवांछित फल देने वाले, पूजा तव न कर पाए।।
इसीलिए इस जग के प्राणी, करते हिय भेदी अपमान।
शरण आपकी पाई मैंने, पाएँगे हम फिर सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम से आच्छादित, खोल सके न ज्ञान नयन।
निश्चय पूर्वक एक बार भी, किए आपके न दर्शन।
दुःख मर्म भेदी हे स्वामी! इसीलिए बहु सता रहे।
किये दर्श न पूर्व जन्म में, अतः कर्म के घात सहे।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू आपके चरणों की हम, दर्शन पूजन को आए।
यह निश्चय प्रभु नहीं आपको, हृदय में धारण कर पाए॥
भाव शून्य भक्ती करने से, हमने भारी दु:ख सहे।
क्रिया भाव से रहित लोक में, फलदायी न कभी रहे॥38॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जन माध्यस्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथ नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! दुखी जन के वत्सल हे!, शरणागत को एक शरण।
करुणाकर हे इन्द्रिय जेता, योगीश्वर तव दोय चरण॥
हे महेश! हम भक्ती पूर्वक, झुका रहे हैं पद में शीश।
दूर करो मेरे दुख सारे, यही प्रार्थना दो आशीष॥39॥

ॐ ह्रीं भक्तजन वत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशरण शरण शरण प्रतिपालक, जगपति जगती के ईश।
गुण अनन्त के धारी भगवन, कर्म विजेता हे जगदीश!॥
तव पद पंकज में रहकर भी, ध्यान से हम प्रभु रहित रहे।
इसीलिए हे प्रभुवर हमने, कर्मों के घनघात सहे॥40॥

ॐ ह्रीं सौभाग्य दायक पदकमल युगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, वन्दनीय इन्द्रों से नाथ!।
भव तारक हे प्रभो! आप हो, करुणाकर त्रैलोकी नाथ!॥
करुण सागर हे जिनेन्द्र! प्रभु, दुखिया का उद्धार करो।
महा भयानक दुख सागर से, मुझको भी प्रभु पार करो॥41॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थ वेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे शरणागत के प्रतिपालक, शरण आपकी हम आए।
किंचित पुण्य कमाया हमने, भक्ति चरण की जो पाए॥
यही चाहते हम भव-भव में, स्वामी मेरे आप रहो।
हम बन सकें आपके जैसे, बनो मेरे आदर्श अहो॥42॥

ॐ ह्रीं पुण्य बहुजन सेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिनेन्द्र! सावधान बुद्धि से, भव्य पुरुष जो भी आते।
रोमांचित हो मुख अम्बुज के, लक्ष्य बना दर्शन पाते॥
विधी पूर्वक संस्तव रचना, करते हैं जो 'विशद' महान॥
स्वर्गों के सुख पाने वाले, अतिशीघ्र पाते निर्वाण॥43॥

ॐ ह्रीं जन्म जरा मृत्यु निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन के शुभ नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा पाने हेतू, करते सहसा स्वर्ग प्रवेश॥
किंचित् काल भोग करके नर, मानव गति में आते हैं।
कर्म शृंखला शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं॥44॥

ॐ ह्रीं कुमुदचंद्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित श्री पार्श्वनाथाय नमः मम् कालसर्प दोष निवारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–शिव पद पाया आपने, करके आतम ध्यान।
कृपा आपकी प्राप्त हो, करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं विंशति दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जापः–ॐ ह्रीं सर्व व्याधि विनाशन समर्थाय श्री पार्श्वनाथाय नमः

2. **ॐ ह्रीं कमठोपसर्ग जिताय श्री पार्श्वनाथाय जिनेन्द्राय नमः**

समुच्चय जयमाला

दोहा– पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल॥

(चौपाई छन्द)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान, ऊँचा सप्त राजू पहिचान॥
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरू अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही, मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार॥
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान॥
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।

वृद्ध महर्षि आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक॥
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान॥
धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार॥
ग्वाल बाल निकला तब एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ॥
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख॥
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तब नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था जिनका काम॥
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक॥
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट॥
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान॥
क्षपणक को वह माने ही, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ॥
स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान॥
भूप ने कीन्हा यही कथन, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ॥
''आकर्णितोऽपि'' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, गुरु का तन हो गया महान॥
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार॥
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत।

(धत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता मुक्तिदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन॥
जय मोक्ष प्रदाता भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– पुष्पाञ्जलि यह नाथ!, करते हैं हम भाव से।

श्री जिन सहस्रनाम मन्त्रावली

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः
2. ॐ ह्रीं स्वयं भुवे नमः
3. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः
4. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवाय नमः
5. ॐ ह्रीं अर्हं शम्भवे नमः
6. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः
8. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः
9. ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः
10. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः
11. ॐ ह्रीं अर्हं अपुन र्भवाय नमः
12. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः
13. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व लोकेशाय नमः
14. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व तश्चक्षुषे नमः
15. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः
16. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः
17. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व विद्येशाय नमः
18. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व योनये नमः
19. ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः
20. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व दृश्वने नमः
21. ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः
22. ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः
23. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः
24. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व लोचनाय नमः
25. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व व्यापिने नमः
26. ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः
27. ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः
28. ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः
29. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः
30. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व कर्मणे नमः
31. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः
32. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व मूर्तये नमः
33. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः
34. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व दृशे नमः
35. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व भूतेशाय नमः
36. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व ज्योतिषे नमः
37. ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः
38. ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः
39. ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः
40. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः
41. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व रीशाय नमः
42. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः
43. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तजिते नमः
44. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः
45. ॐ ह्रीं अर्हं भव्य बन्धवे नमः
46. ॐ ह्रीं अर्हं अबन्धनाय नमः
47. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि पुरुषाय नमः
48. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः
49. ॐ ह्रीं अर्हं पञ्च ब्रह्मयाय नमः
50. ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः
51. ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः
52. ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः
53. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः
54. ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः
55. ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः
56. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः
57. ॐ ह्रीं अर्हं अजाय नमः
58. ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने नमः
59. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये नमः
60. ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय नमः
61. ॐ ह्रीं अर्हं मोहारये नमः
62. ॐ ह्रीं अर्हं विजयिने नमः

63. ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे नमः
64. ॐ ह्रीं अर्हं चक्रिणे नमः
65. ॐ ह्रीं अर्हं दया ध्वजाय नमः
66. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताराये नमः
67. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तात्मने नमः
68. ॐ ह्रीं अर्हं योगिने नमः
69. ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः
70. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे नमः
71. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म तत्त्वज्ञाय नमः
72. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः
73. ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय नमः
74. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय नमः
75. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय नमः
76. ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्माने नमः
77. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय नमः
78. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध शासनाय नमः
79. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध सिद्धान्तविद नमः
80. ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय नमः
81. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध साध्याय नमः
82. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय नमः
83. ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे नमः
84. ॐ ह्रीं अर्हं अच्युताय नमः
85. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः
86. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे नमः
87. ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय नमः
88. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे नमः
89. ॐ ह्रीं अर्हं अजराय नमः
90. ॐ ह्रीं अर्हं अजर्याय नमः
91. ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे नमः
92. ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय नमः
93. ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय नमः
94. ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे नमः
95. ॐ ह्रीं अर्हं असम्भूष्णवे नमः
96. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः
97. ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय नमः
98. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने नमः
99. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिषे नमः
100. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि त्रिजगत्परमेश्वरांत्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः

101. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापतये नमः
102. ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः
103. ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः
104. ॐ ह्रीं अर्हं पूत शासन नमः
105. ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः
106. ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योतिषे नमः
107. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः
108. ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः
109. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः
110. ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः
111. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः
112. ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः
113. ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः
114. ॐ ह्रीं अर्हं शुचिये नमः
115. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः
116. ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः
117. ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः
118. ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः
119. ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः
120. ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः
121. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त दीप्तिये नमः
122. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्माने नमः
123. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं बुद्धाय नमः
124. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः

125. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः
126. ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः
127. ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः
128. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः
129. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः
130. ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः
131. ॐ ह्रीं अर्हं जगत् ज्योतिषे नमः
132. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये नमः
133. ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः
134. ॐ ह्रीं अर्हं अचल स्थितये नमः
135. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः
136. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः
137. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
138. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः
139. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः
140. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः
141. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः
142. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः
143. ॐ ह्रीं अर्हं न्याय शास्त्रकृते नमः
144. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः
145. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः
146. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः
147. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः
148. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म तीर्थकृते नमः
149. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः
150. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः
151. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः
152. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः
153. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः
154. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः
155. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः
156. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः
157. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः
158. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः
159. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः
160. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः
161. ॐ ह्रीं अर्हं भूत भावनाय नमः
162. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः
163. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः
164. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः
165. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः
166. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः
167. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः
168. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः
169. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः
170. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूत विभवाय नमः
171. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः
172. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः
173. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः
174. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः
175. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः
176. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः
177. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः
178. ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाये नमः
179. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय नमः
180. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दर्शनाय नमः
181. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने नमः
182. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व लोकेशाय नमः
183. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे नमः
184. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोक जिताय नमः
185. ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये नमः
186. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय नमः
187. ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते नमः
188. ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे नमः

189. ॐ ह्रीं अर्हं सूरये नमः
190. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय नमः
191. ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय नमः
192. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतः नमः
193. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व शीर्षाय नमः
194. ॐ ह्रीं अर्हं शुचि श्रवसे नमः
195. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्र शीर्षाय नमः
196. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेत्रज्ञान नमः
197. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय नमः
198. ॐ ह्रीं अर्हं सहस्र पादे नमः
199. ॐ ह्रीं अर्हं भूत भव्य भवद् भर्त्रे नमः
200. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व विद्या महेश्वराय नमः
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य भाषापत्यादि विश्व विद्या महेश्वरान्त्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः
201. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः
202. ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः
203. ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः
204. ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय नमः
205. ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः
206. ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः
207. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः
208. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः
209. ॐ ह्रीं अर्हं बहिष्ठाय नमः
210. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः
211. ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः
212. ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः
213. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमुटे नमः
214. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसजे नमः
215. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वटे नमः
216. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः
217. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व नायकाय नमः
218. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिषे नमः
219. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व रूपात्मने नमः
220. ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः
221. ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय नमः
222. ॐ ह्रीं अर्हं विभावाय नमः
223. ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः
224. ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः
225. ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः
226. ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः
227. ॐ ह्रीं अर्हं अजरते नमः
228. ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः
229. ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः
230. ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः
231. ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः
232. ॐ ह्रीं अर्हं वीत मत्सराय नमः
233. ॐ ह्रीं अर्हं विनेय जनता बन्धवे नमः
234. ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेष नमः
235. ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः
236. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
237. ॐ ह्रीं अर्हं विदषे नमः
238. ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः
239. ॐ ह्रीं अर्हं सुविधिये नमः
240. ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः
241. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ति भाजे नमः
242. ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वी मूर्तिये नमः
243. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ति भाजे नमः
244. ॐ ह्रीं अर्हं सल्लिात्मकाय नमः
245. ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः
246. ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः
247. ॐ ह्रीं अर्हं वह्नि मूर्तिये नमः
248. ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधके नमः
249. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः

250. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः
251. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः
252. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्राम पूजिताय नमः
253. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विते नमः
254. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः
255. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः
256. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञागाय नमः
257. ॐ ह्रीं अर्हं अममृताय नमः
258. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः
259. ॐ ह्रीं अर्हं व्योम मूर्तये नमः
260. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः
261. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लपाय नमः
262. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः
263. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः
264. ॐ ह्रीं अर्हं सोम मूर्तये नमः
265. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः
266. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः
267. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः
268. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः
269. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्र कृते नमः
270. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः
271. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्र मूर्तय नमः
272. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय नमः
273. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः
274. ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नमः
275. ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः
276. ॐ ह्रीं अर्हं कृतातााय नमः
277. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्तकृत नमः
278. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः
279. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः
280. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः
281. ॐ ह्रीं अर्हं कृत कृत्याय नमः
282. ॐ ह्रीं अर्हं कृत क्रतवे नमः
283. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः
284. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः
285. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः
286. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने नमः
287. ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद् नमः
288. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः
289. ॐ ह्रीं अर्हं परंबह्ममणे नमः
290. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने नमः
291. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म सम्भवाय नमः
292. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः
293. ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे नमः
294. ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्म पतये नमः
295. ॐ ह्रीं अर्हं सुपसन्नाय नमः
296. ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने नमः
297. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान धर्म दम प्रभवे नमः
298. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने नमः
299. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तात्मने नमः
300. ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठायदि पुराणपुरुषोत्तमान्त्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः
301. ॐ ह्रीं अर्हं महाशोक ध्वाजाय नमः
302. ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः
303. ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः
304. ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे नमः
305. ॐ ह्रीं अर्हं पद्म विष्ठराय नमः
306. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः
307. ॐ ह्रीं अर्हं पद्म सम्भूतये नमः
308. ॐ ह्रीं अर्हं पद्म नाभये नमः
309. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः
310. ॐ ह्रीं अर्हं पद्म योनये नमः
311. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः

312. ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः
313. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः
314. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुती श्वराय नमः
315. ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः
316. ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः
317. ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः
318. ॐ ह्रीं अर्हं कृत क्रियाय नमः
319. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः
320. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः
321. ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः
322. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः
323. ॐ ह्रीं अर्हं गणा ग्रण्यै नमः
324. ॐ ह्रीं अर्हं गुणा कराय नमः
325. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः
326. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः
327. ॐ ह्रीं अर्हं गुण नायकाय नमः
328. ॐ ह्रीं अर्हं गुणा दरीणे नमः
329. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः
330. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः
331. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः
332. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः
333. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्य नमः
334. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः
335. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः
336. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः
337. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य नायकाय नमः
338. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः
339. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः
340. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः
341. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः
342. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य शासनाय नमः
343. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरामाय नमः
344. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः
345. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यायपुण्य निरोधकाय नमः
346. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः
347. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः
348. ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः
349. ॐ ह्रीं अर्हं वीत कल्मषाय नमः
350. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः
351. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः
352. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः
353. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः
354. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः
355. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः
356. ॐ ह्रीं अर्हं निराहराय नमः
357. ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः
358. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः
359. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय नमः
360. ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे नमः
361. ॐ ह्रीं अर्हं निधूर्ततागसे नमः
362. ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय नमः
363. ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय नमः
364. ॐ ह्रीं अर्हं विपुल ज्योतिषे नमः
365. ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय नमः
366. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य नमः
367. ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृत्ताय नमः
368. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तामने नमः
369. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुते नमः
370. ॐ ह्रीं अर्हं सुनय तत्वविदे नमः
371. ॐ ह्रीं अर्हं एक विद्याय नमः
372. ॐ ह्रीं अर्हं महा विद्याय नमः
373. ॐ ह्रीं अर्हं मुनये नमः
374. ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढाय नमः
375. ॐ ह्रीं अर्हं पतये नमः

376. ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय नमः
377. ॐ ह्रीं अर्हं विद्या निधिये नमः
378. ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे नमः
379. ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे नमः
380. ॐ ह्रीं अर्हं विहतान्तकाय नमः
381. ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे नमः
382. ॐ ह्रीं अर्हं पिता महाय नमः
383. ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे नमः
384. ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय नमः
385. ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय नमः
386. ॐ ह्रीं अर्हं गतये नमः
387. ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे नमः
388. ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय नमः
389. ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय नमः
390. ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय नमः
391. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
392. ॐ ह्रीं अर्हं पुन्से नमः
393. ॐ ह्रीं अर्हं कवये नमः
394. ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषाय नमः
395. ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे नमः
396. ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभाय नमः
397. ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे नमः
398. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा प्रभवाय नमः
399. ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे नमः
400. ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक पितामहाय नमः
ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वाजादि भुवनैक पितामहान्त्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः
401. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्ष लक्षणाय नमः
402. ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय नमः
403. ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः
404. ॐ ह्रीं अर्हं शुभ लक्षणाय नमः
405. ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः
406. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षाय नमः
407. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः
408. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः
409. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः
410. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध संकल्पाय नमः
411. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः
412. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध साधनाय नमः
413. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्ध बोध्याय नमः
414. ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः
415. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः
416. ॐ ह्रीं अर्हं महर्धिकाय नमः
417. ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः
418. ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः
419. ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः
420. ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाये नमः
421. ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः
422. ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः
423. ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः
424. ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः
425. ॐ ह्रीं अर्हं वदतांतवराय नमः
426. ॐ ह्रीं अर्हं अनादि निधनाय नमः
427. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः
428. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्त वाचे नमः
429. ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्त शासनाय नमः
430. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि कृते नमः
431. ॐ ह्रीं अर्हं युगा धाराय नमः
432. ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः
433. ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः
434. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः
435. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रिया नमः
436. ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः

437. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः
438. ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः
439. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्रियाय नमः
440. ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः
441. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्र महिमाय नमः
442. ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः
443. ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः
444. ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः
445. ॐ ह्रीं अर्हं कत्रे नमः
446. ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः
447. ॐ ह्रीं अर्हं भव तारकाय नमः
448. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः
449. ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः
450. ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः
451. ॐ ह्रीं अर्हं पराघ्यार्य नमः
452. ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः
453. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त र्धये नमः
454. ॐ ह्रीं अर्हं अमेय र्धये नमः
455. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्धये नमः
456. ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः
457. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः
458. ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः
459. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय नमः
460. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय नमः
461. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय नमः
462. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय नमः
463. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय नमः
464. ॐ ह्रीं अर्हं महा तपसे नमः
465. ॐ ह्रीं अर्हं महा तेजसे नमः
466. ॐ ह्रीं अर्हं महो दर्काय नमः
467. ॐ ह्रीं अर्हं महो दयाय नमः
468. ॐ ह्रीं अर्हं महा यशसे नमः
469. ॐ ह्रीं अर्हं महा धाम्ने नमः
470. ॐ ह्रीं अर्हं महा सत्वाय नमः
471. ॐ ह्रीं अर्हं महा धृतये नमः
472. ॐ ह्रीं अर्हं महा धैर्याय नमः
473. ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय नमः
474. ॐ ह्रीं अर्हं महा संपदे नमः
475. ॐ ह्रीं अर्हं महा बलाय नमः
476. ॐ ह्रीं अर्हं महा शक्तये नमः
477. ॐ ह्रीं अर्हं महा ज्योतिषे नमः
478. ॐ ह्रीं अर्हं महा भूतये नमः
479. ॐ ह्रीं अर्हं महा द्युतये नमः
480. ॐ ह्रीं अर्हं महा मतये नमः
481. ॐ ह्रीं अर्हं महा नीतये नमः
482. ॐ ह्रीं अर्हं महा क्षान्तये नमः
483. ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय नमः
484. ॐ ह्रीं अर्हं महा प्राज्ञाय नमः
485. ॐ ह्रीं अर्हं महा भागाय नमः
486. ॐ ह्रीं अर्हं महा नन्दाय नमः
487. ॐ ह्रीं अर्हं महा कवये नमः
488. ॐ ह्रीं अर्हं महा महसे नमः
489. ॐ ह्रीं अर्हं महा कीर्तये नमः
490. ॐ ह्रीं अर्हं महा कान्तये नमः
491. ॐ ह्रीं अर्हं महा वपुषे नमः
492. ॐ ह्रीं अर्हं महा दानाय नमः
493. ॐ ह्रीं अर्हं महा ज्ञानाय नमः
494. ॐ ह्रीं अर्हं महा योगाय नमः
495. ॐ ह्रीं अर्हं महा गुणाय नमः
496. ॐ ह्रीं अर्हं महा महपतये नमः
497. ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहा पंचकल्याणकाय नमः
498. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे नमः
499. ॐ ह्रीं अर्हं महा प्रातिहार्याधीशाय नमः
500. ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय नमः

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वरान्त्य शत नामधरार्हत परमेष्ठिने नमो नमः
501. ॐ ह्रीं अर्हं महा मुनये नमः
502. ॐ ह्रीं अर्हं मामोनिने नमः
503. ॐ ह्रीं अर्हं महा ध्यानिने नमः
504. ॐ ह्रीं अर्हं महा दमाय नमः
505. ॐ ह्रीं अर्हं महा क्षमाय नमः
506. ॐ ह्रीं अर्हं महा शीलाय नमः
507. ॐ ह्रीं अर्हं महा यज्ञाय नमः
508. ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः
509. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः
510. ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः
511. ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्ति धराय नमः
512. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
513. ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्री मयाय नमः
514. ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः
515. ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः
516. ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः
517. ॐ ह्रीं अर्हं महा कारुण्यकाय नमः
518. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रे नमः
519. ॐ ह्रीं अर्हं महा मन्त्राय नमः
520. ॐ ह्रीं अर्हं महा यतये नमः
521. ॐ ह्रीं अर्हं महा नादाय नमः
522. ॐ ह्रीं अर्हं महा घोषाय नमः
523. ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः
524. ॐ ह्रीं अर्हं महासापतये नमः
525. ॐ ह्रीं अर्हं महा ध्वरधराय नमः
526. ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः
527. ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः
528. ॐ ह्रीं अर्हं महिष्टवाचे नमः
529. ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः
530. ॐ ह्रीं अर्हं महासांधाम्ने नमः
531. ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः
532. ॐ ह्रीं अर्हं महितो दयाये नमः
533. ॐ ह्रीं अर्हं क्लेशांकुशाय नमः
534. ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः
535. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः
536. ॐ ह्रीं अर्हं महाभूत नमः
537. ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः
538. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्ताय नमः
539. ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोध रिपवे नमः
540. ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः
541. ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धि संतारिणे नमः
542. ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रि नमः
543. ॐ ह्रीं अर्हं महागुणा कराय नमः
544. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ताय नमः
545. ॐ ह्रीं अर्हं महायोगी श्वराय नमः
546. ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः
547. ॐ ह्रीं अर्हं महा ध्यान पतये नमः
548. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यान महाधर्मणे नमः
549. ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः
550. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मारिघ्ने नमः
551. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञान नमः
552. ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः
553. ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः
554. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व क्लेशापहाय नमः
555. ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः
556. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व दोषहराय नमः
557. ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः
558. ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः
559. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः
560. ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः
561. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः
562. ॐ ह्रीं अर्हं सर्व योगीश्वराय नमः

563. ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्याय नमः
564. ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः
565. ॐ ह्रीं अर्हं विष्टर श्रवसे नमः
566. ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः
567. ॐ ह्रीं अर्हं दम तीर्थेशाय नमः
568. ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः
569. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान सर्वज्ञाय नमः
570. ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः
571. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः
572. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः
573. ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः
574. ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः
575. ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीण बन्धाय नमः
576. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः
577. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः
578. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेम शासनाय नमः
579. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवायनमः
580. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः
581. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणाय नमः
582. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः
583. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः
584. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः
585. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः
586. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः
587. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः
588. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः
589. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः
590. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः
591. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दयाय नमः
592. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः
593. ॐ ह्रीं अर्हं वन्द्याय नमः
594. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः
595. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः
596. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः
597. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः
598. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः
599. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः
600. ॐ ह्रीं अर्हं अररिंजयाय नमः
ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि अरिंजयान्तयशत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः
601. ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्काराय नमः
602. ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः
603. ॐ ह्रीं अर्हं वेकृतान्तकृते नमः
604. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः
605. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तगवे नमः
606. ॐ ह्रीं अर्हं कान्ताय नमः
607. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः
608. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः
609. ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः
610. ॐ ह्रीं अर्हं जित कामाराये नमः
611. ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः
612. ॐ ह्रीं अर्हं अमित शासनाय नमः
613. ॐ ह्रीं अर्हं जित क्रोधाय नमः
614. ॐ ह्रीं अर्हं जिता मित्राय नमः
615. ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः
616. ॐ ह्रीं अर्हं जितान्तकाय नमः
617. ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः
618. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः
619. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः
620. ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभि नमः
621. ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्र वन्द्याय नमः
622. ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः
623. ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः
624. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय नमः
625. ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः
626. ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः

627. ॐ ह्रीं अर्हं जातसुव्रताय नमः
628. ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः
629. ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः
630. ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः
631. ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय नमः
632. ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे नमः
633. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः
634. ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः
635. ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः
636. ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः
637. ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः
638. ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः
639. ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः
640. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः
641. ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः
642. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभजे नमः
643. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः
644. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः
645. ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः
646. ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः
647. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः
648. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकाय नमः
649. ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः
650. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपते नमः
651. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः
652. ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः
653. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान निग्राह्याय नमः
654. ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः
655. ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः
656. ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः
657. ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः
658. ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः
659. ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः
660. ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः
661. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः
662. ॐ ह्रीं अर्हं चतु र्वक्त्राय नमः
663. ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः
664. ॐ ह्रीं अर्हं चतु र्मुखाय नमः
663. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः
666. ॐ ह्रीं अर्हं सत्य विज्ञानाय नमः
667. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः
668. ॐ ह्रीं अर्हं सत्य शासनाय नमः
669. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः
670. ॐ ह्रीं अर्हं सन्धानाय नमः
671. ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः
672. ॐ ह्रीं अर्हं सत्य परायणाय नमः
673. ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः
674. ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः
675. ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयासे नमः
676. ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः
677. ॐ ह्रीं अर्हं दूर दर्शनाय नमः
678. ॐ ह्रीं अर्हं अणवे नमः
679. ॐ ह्रीं अर्हं अणीयसे नमः
680. ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः
681. ॐ ह्रीं अर्हं गरीय सामाद्यगुरवे नमः
682. ॐ ह्रीं अर्हं सदा योगाय नमः
686. ॐ ह्रीं अर्हं सदा भोगाय नमः
684. ॐ ह्रीं अर्हं सदा तृप्ताय नमः
685. ॐ ह्रीं अर्हं सदा शिवाय नमः
683. ॐ ह्रीं अर्हं सदा गतिये नमः
687. ॐ ह्रीं अर्हं सदा सौख्याय नमः
688. ॐ ह्रीं अर्हं सदा विद्याय नमः
689. ॐ ह्रीं अर्हं सदो दयाय नमः
690. ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः
691. ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः
692. ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः

693. ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः
694. ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः
695. ॐ ह्रीं अर्हं सुहदे नमः
696. ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः
697. ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः
698. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः
699. ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः
700. ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्कारादि दमेश्वरान्त्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः

701. ॐ ह्रीं अर्हं वृहद् वृहस्पतय नमः
702. ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः
703. ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतय नमः
704. ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः
705. ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः
706. ॐ ह्रीं अर्हं धिषणय नमः
707. ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः
708. ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः
709. ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः
710. ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः
711. ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः
712. ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः
713. ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृतये नमः
714. ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः
715. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः
716. ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः
717. ॐ ह्रीं अर्हं कृत लक्षणाय नमः
718. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान गर्भाय नमः
719. ॐ ह्रीं अर्हं दया गर्भाय नमः
720. ॐ ह्रीं अर्हं रत्न गर्भाय नमः
721. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः
722. ॐ ह्रीं अर्हं पद्म गर्भाय नमः
723. ॐ ह्रीं अर्हं जगद् गर्भाय नमः
724. ॐ ह्रीं अर्हं हेम गर्भाय नमः
725. ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः
726. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः
727. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः
728. ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः
729. ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः
730. ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः
731. ॐ ह्रीं अर्हं मनोहाराय नमः
732. ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः
733. ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः
734. ॐ ह्रीं अर्हं गम्भीर शासनाय नमः
735. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूयाय नमः
736. ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः
737. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः
738. ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः
739. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म चक्रायुधाय नमः
740. ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः
741. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः
742. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म घोषणाय नमः
743. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघ वाचे नमः
744. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः
745. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः
746. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघ शासनाय नमः
747. ॐ ह्रीं अर्हं सुरूपाय नमः
748. ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः
749. ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः
750. ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः
751. ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः
752. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः
753. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थयभाजे नमः

754. ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः
755. ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः
756. ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः
757. ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः
758. ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः
759. ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय नमः
760. ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय नमः
761. ॐ ह्रीं अर्हं वश्येन्द्रियाय नमः
762. ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने नमः
763. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः
764. ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय नमः
765. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय नमः
766. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त धामर्षये नमः
767. ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय नमः
768. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने नमः
769. ॐ ह्रीं अर्हं अनयाय नमः
770. ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे नमः
771. ॐ ह्रीं अर्हं उपमा नमः
772. ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये नमः
773. ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय नमः
774. ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय नमः
775. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय नमः
776. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते नमः
777. ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै नमः
778. ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मे नमः
779. ॐ ह्रीं अर्हं नानैक तत्त्वदृशे नमः
780. ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्म गम्याय नमः
781. ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यातत्मने नमः
782. ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः
783. ॐ ह्रीं अर्हं योग वन्दिताय नमः
784. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय नमः
785. ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने नमः
786. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल विषयार्थदृशे नमः
787. ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय नमः
788. ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय नमः
789. ॐ ह्रीं अर्हं दान्ताय नमः
790. ॐ ह्रीं अर्हं दमिने नमः
791. ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्ति परायणाय नमः
792. ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः
793. ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय नमः
794. ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय नमः
795. ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय नमः
796. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद् बल्लभाय नमः
797. ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय नमः
798. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगनमंगलोदयाय नमः
799. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पति पूजांघ्रये नमः
800. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्र शिखामणये नमः

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्वृहस्पतयादि त्रिलोकाग्र-शिक्षामणयन्त्य शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः

801. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल दर्शिने नमः
802. ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः
803. ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः
804. ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय नमः
805. ॐ ह्रीं अर्हं लोकातिगाय नमः
806. ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः
807. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोककैक सारथये नमः
808. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः
809. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः
810. ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः
811. ॐ ह्रीं अर्हं कृत पूर्वाग विस्तराय नमः
812. ॐ ह्रीं अर्हं आदि देवाय नमः
813. ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः
814. ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः
815. ॐ ह्रीं अर्हं आघि देवतायै नमः

816. ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः
817. ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः
818. ॐ ह्रीं अर्हं युगादि स्थिति देशकाय नमः
819. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण वर्णाय नमः
820. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः
821. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण नमः
822. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण लक्षणाय नमः
823. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण प्रकृतये नमः
824. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त कल्याणात्मने नमः
825. ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः
826. ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः
827. ॐ ह्रीं अर्हं कला तीताय नमः
828. ॐ ह्रीं अर्हं कलि लघ्नाय नमः
829. ॐ ह्रीं अर्हं कला धराय नमः
830. ॐ ह्रीं अर्हं देव देवाय नमः
831. ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः
832. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बन्धवे नमः
833. ॐ ह्रीं अर्हं जगद् विभवे नमः
834. ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः
835. ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः
836. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः
837. ॐ ह्रीं अर्हं जगद ग्रजाय नमः
838. ॐ ह्रीं अर्हं चराचर गुरवे नमः
839. ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः
840. ॐ ह्रीं अर्हं गूढात्मने नमः
841. ॐ ह्रीं अर्हं गूढ गोचराय नमः
842. ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः
843. ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः
844. ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलन सत्प्रभाय नमः
845. ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः
846. ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः
847. ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः
848. ॐ ह्रीं अर्हं कनक प्रभाय नमः
849. ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्ण वर्णाय नमः
850. ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः
851. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटि समप्रभाय नमः
852. ॐ ह्रीं अर्हं तपनीय निभाय नमः
853. ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः
854. ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः
855. ॐ ह्रीं अर्हं अनल प्रभाय नमः
856. ॐ ह्रीं अर्हं सन्ध्या नमः
857. ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभायनम नमः
858. ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामी करच्छवये नमः
859. ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्त कनकच्छायाय नमः
860. ॐ ह्रीं अर्हं कनत्काञ्चन सन्निभाय नमः
861. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्य वर्णाय नमः
862. ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय नमः
863. ॐ ह्रीं अर्हं शातकुम्भ निभप्राय नमः
864. ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय नमः
865. ॐ ह्रीं अर्हं जातरुपाभाय नमः
866. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्त जाम्बू नदद्युतये नमः
867. ॐ ह्रीं अर्हं सुधौत कलधौत श्रिये नमः
868. ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय नमः
869. ॐ ह्रीं अर्हं हाटक द्युतये नमः
870. ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय नमः
871. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय नमः
872. ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय नमः
873. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय नमः
874. ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टा क्षराय नमः
875. ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय नमः
876. ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय नमः
877. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय नमः
878. ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय नमः
879. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे नमः
880. ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे नमः
881. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभवे नमः

882. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ति निष्ठाय नमः
883. ॐ ह्रीं अर्हं मुनि ज्येष्ठाय नमः
884. ॐ ह्रीं अर्हं शिव तातये नमः
885. ॐ ह्रीं अर्हं शिव प्रदाय नमः
886. ॐ ह्रीं अर्हं शन्तिदाय नमः
887. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ति कृते नमः
888. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तये नमः
889. ॐ ह्रीं अर्हं कान्ति मते नमः
890. ॐ ह्रीं अर्हं कामित प्रदाय नमः
891. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयो निधये नमः
892. ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय नमः
893. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठताय नमः
894. ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः
895. ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय नमः
896. ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय नमः
897. ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः
898. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथीयसे नमः
899. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय नमः
900. ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे नमः
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्श्यादि पृथिव्यंत शत्
नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः
901. ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः
902. ॐ ह्रीं अर्हं वात रसनाय नमः
903. ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रन्थेशाय नमः
904. ॐ ह्रीं अर्हं दिगम्बराय नमः
905. ॐ ह्रीं अर्हं निःकिञ्चनाय नमः
906. ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः
907. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः
908. ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः
909. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः
910. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः
911. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः
912. ॐ ह्रीं अर्हं शील सागराय नमः
913. ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः
914. ॐ ह्रीं अर्हं अमित ज्योतिष नमः
915. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योति मूर्तये नमः
916. ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः
917. ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूडामणये नमः
918. ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः
919. ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः
920. ॐ ह्रीं अर्हं विघ्न विनायकाय नमः
921. ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः
922. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः
923. ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोक प्रकाशकाय नमः
924. ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः
925. ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः
926. ॐ ह्रीं अर्हं जागरुकाय नमः
927. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभामयाय नमः
928. ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मी पतये नमः
929. ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिष नमः
930. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म राजय नमः
931. ॐ ह्रीं अर्हं प्रजा हिताय नमः
932. ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः
933. ॐ ह्रीं अर्हं बन्ध मोक्षज्ञाय नमः
934. ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः
935. ॐ ह्रीं अर्हं जित मन्मथाय नमः
936. ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्त रस शैलूषाय नमः
937. ॐ ह्रीं अर्हं भव्य पेटक नायकाय नमः
938. ॐ ह्रीं अर्हं मूलकत्रै नमः
939. ॐ ह्रीं अर्हं अखिल ज्योतिष नमः
940. ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः
941. ॐ ह्रीं अर्हं मूल कारणाय नमः
942. ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः
943. ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः
944. ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः
945. ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः

946. ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः
947. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः
948. ॐ ह्रीं अर्हं वचसा मीशाय नमः
949. ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः
950. ॐ ह्रीं अर्हं विश्व भावविदे नमः
951. ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः
952. ॐ ह्रीं अर्हं तनु निर्मुक्ताय नमः
953. ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः
954. ॐ ह्रीं अर्हं हत दुर्नयाय नमः
955. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः
956. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रित पादाब्जाय नमः
957. ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः
958. ॐ ह्रीं अर्हं अभयं कराय नमः
959. ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्न दोषाय नमः
960. ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः
961. ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः
962. ॐ ह्रीं अर्हं लोक वत्सलाय नमः
963. ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय नमः
964. ॐ ह्रीं अर्हं लोक पतये नमः
965. ॐ ह्रीं अर्हं लोक चक्षुषे नमः
966. ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिय नमः
967. ॐ ह्रीं अर्हं धीरधिये नमः
968. ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय सन्मार्गाय नमः
969. ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय नमः
970. ॐ ह्रीं अर्हं सूनृत पूतवाचे नमः
971. ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा पारमिताय नमः
972. ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय नमः
973. ॐ ह्रीं अर्हं यतये नमः
974. ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः
975. ॐ ह्रीं अर्हं भदन्ताय नमः
976. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः
977. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः
978. ॐ ह्रीं अर्हं कल्प वृक्षाय नमः
979. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः
980. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलित कर्मारये नमः
981. ॐ ह्रीं अर्हं कर्म काष्ठा शुशुक्षणये नमः
982. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः
983. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः
984. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः
985. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादय विचक्षणाय नमः
986. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्त शक्तये नमः
987. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः
988. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः
989. ॐ ह्रीं अर्हं स्त्रिलोचनाय नमः
990. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः
991. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय नमः
992. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः
993. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान वीक्षणाय नमः
994. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः
995. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः
996. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः
997. ॐ ह्रीं अर्हं दया निधिये नमः
998. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः
999. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः
1000. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः
1001. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म देशकाय नमः
1002. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः
1003. ॐ ह्रीं अर्हं सुख साद्भूताय नमः
1004. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य राशये नमः
1005. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः
1006. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः
1007. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः
1008. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म साम्राज्य नायकाय नमः

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि धर्मसाम्राज्य नायकाष्तोष्टोर शत् नामधरार्हत् परमेष्ठिने नमो नमः

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करुण प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी॥

काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए॥

जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्वहन कराया॥

वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला॥

तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥

तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥

नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया॥

प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशी पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए॥

इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।

फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥

पद्मावती के फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षेत्र लगाया भाई॥

चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया॥

सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥

गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए॥

योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई॥

श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते॥

पुत्रहीन सुत साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते॥
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।

हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।

बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्रे बतलाया।

सिरपर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई॥
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आतरी उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
प्रभु कर दो भव से पार आज थारी.... टेक
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आंखों के तारे।
जन्मे है काशीराज-आज थारी....॥1॥

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्नविनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज–आज थारी....॥2॥

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार–आज थारी....॥3॥

दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव दुःख हर्त्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार–आज थारी....॥4॥

'विशद' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार–आज थारी....॥5॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर स्थित पार्श्वनाथ नगरे एयर पोर्ट समीपे श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर स्थापना पञ्चकल्याणक पावन अवशरे वी. नि. 2542 कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्याँ सोमवार वासरे श्री कालसर्प दोष निवारक विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
बाजे छम-छम-छम...1

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
बाजे छम-छम-छम...2

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
बाजे छम-छम-छम...3

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
बाजे छम-छम-छम...4

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
बाजे छम-छम-छम...5

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग–3
139. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग–1
143. चिंतवन सरोवर भाग–2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग–1
148. मूक उपदेश भाग–2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें।